।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3
सब सुखों के दाता परमेश्वर! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

वर्ष 36, अंक 25 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 मई, 2013 से रविवार 12 मई, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 8 तक

शारीरिक भाषा की महानता

– पं. सत्यवीर शास्त्री

सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात् मानव मानव से अशाब्दिक वार्तालाप करता था। मन में उत्पन्न होने वाले भावों को प्रकट करने का साधन पूर्ण विकसित भाषा है। जब भाषा विकसित नहीं हुई थी, तब व्यक्ति से चेहरे से, उसके बैठने–उठने, चलने–बोलने के ढंग से हाथ–पैरों के इशारे से उसकी भावनाओं को समझा जाता था। इसे शारीरिक भाषा कहते हैं।

वर्तमान में शारीरिक भाषा की ओर नवयुवक–नवयुवतियाँ आकर्षित हो रही हैं। क्योंकि मुलाकात, सामुहिक बहस, वक्तृत्वस्पर्धा, वाद–विवाद भाषण तथा नृत्य की परीक्षाओं में शारीरिक भाषा को प्राधान्य दिया जा रहा है। समयानुसार शारीरिक भाषा का प्रदर्शन करने वाले भाषाविदों से भी अपने कार्य में सफल होते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में भी शारीरिक भाषा अपना विशिष्ट प्रभाव रखती है। मनुष्य का चेहरा, आँखें, भाषण शैली, चाल–चलन ये शारीरिक भाषा के प्रमुख साधन हैं।

चेहरा – चेहरा मनुष्य का दर्पण है। व्यक्तित्व की पहचान चेहरे से होती है। उत्साह, निरुत्साह, राग–द्वेष, काम–क्रोध, चिन्ता, आनन्द की जानकारी चेहरे से होती है। चेहरे पर स्वाभाविक हंसी हो तो, मनुष्य आनन्दी। निराशा या उदासी हो तो दुःखी। आँखें लाल, चेहरा तमतमाया हो तो क्रोधी समझा जाता है। दांतों से नाखून काटनेवाला, बैठे–बैठे पैर हिलाने वाला, निराशालिप्त समझना चाहिए। शिर के बाल बार–बार खींचने वाला आपत्ति में फंसा हुआ होता है। बार–बार गला साफ करने वाला अधिकार जमाना चाहता है। हाथ–पांव बांधकर बैठने वाला, पैर पर पैर रखने वाला, अपने विचारों को गोपनीय रखकर दूसरों का निरीक्षण करने वाला होता है। यह भी सच है – **'दिल के भाव बता देता है, असली–नकली चेहरा।'**

स्वामी दयानन्द सरस्वती भक्तों से घिरे हुए उच्चासन पर विराजमान थे। एक ब्राह्मण बहुत बड़ा मिठाई का पैकेट लेकर स्वामीजी के पास आकर बोला – 'महाराज! थोड़ी–सी मिठाई स्वीकार कीजिए।' चरणवन्दन कर स्वामीजी के सामाने मिठाई रख दी। स्वामी जी ने जैसे ही उसके चेहरे पर नजर डाली, वैसे ही वह घबराया और उसका चेहरा उदास हो गया। वह नीचे जमीन की ओर देखने लगा। स्वामी जी ने एक पेड़ा उठाया और कहा, लो प्रसाद खाओ। ब्राह्मण बहुत डर गया, हाथ जोड़कर बोला, महाराज यह मिठाई केवल आपके लिए ही है, ऐसा कहकर वह लौट गया।

स्वामी जी ने भक्तों से कहा, इसके चेहरे से ऐसा अनुमान है कि यह कोई दुस्साहस करने का प्रयास कर रहा है। इसने मिठाई में कोई जहरीली चीज मिलाई है। एक भक्त ने कहा, महाराज यह सत्य कैसे जानें? स्वामी जी ने कहा आप लोगों को अभी दिखलाते हैं। ऐसा कहने पर उन्होंने वही पेड़ा कुत्ते को डाला। कुत्ते ने खा लिया। पांच मिनट बाद कुत्ता रोने–चिल्लाने लगा, उठ खड़ा होता फिर गिर पड़ता, चारों ओर चक्कर काटता। इस दृश्य को देखकर भक्त बड़े अचरज में पड़ गए। स्वामी जी ने कुत्ते को फिर कोई औषधि खिलाई, जिससे कुत्ता आधे घंटे के बाद स्वस्थ हो गया। स्वामी जी ने चेहरे से जो अनुमान लगाया था, वह सच था।

शेष पृष्ठ 5 पर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलाधिपति निर्वाचन हेतु चुनाव प्रक्रिया आरम्भ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की देखरेख में सम्पन्न होंगे चुनाव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी प्रधान एवं श्री प्रकाश आर्य महामन्त्री चुने गए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल का त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 4 मई, 2013 को सभा मुख्यालय तात्या टोपे नगर, भोपाल में सम्पन्न हुए। निर्वाचन अधिकारी श्री सुदामामुनि जी की अध्यक्षता में कार्यवाही सम्पन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से प्रधान के रूप में श्री इन्द्र प्रकाश गांधी (शिवपुरी), श्री प्रकाश आर्य (मऊ)–महामन्त्री एवं श्री अतुल वर्मा कोषाध्यक्ष के रूप में निर्वाचित घोषित किए गए। इसी अवसर पर सर्वश्री भगवानदास अग्रवाल, परमालसिंह कुशवाह, मानसिंह यादव, लक्ष्मी नारायण पाटीदार, रामपाल सोनी, वानप्रस्थी एवं श्री गोविन्दलाल आर्य उपप्रधान के रूप में निर्वाचित हुए।

शेष पृष्ठ 5 पर

दिल्ली के आर्य विद्यालयों के शिक्षक वर्ग की ग्रीष्मकालीन कार्यशाला/गोष्ठीयों का आयोजन

क्षेत्र	स्थान	दिनांक	समय
पूर्वी दिल्ली	दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली–110095	गुरुवार, 17 मई, 2013	प्रातः 9 से दोप. 02 बजे तक
मध्य दिल्ली	रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001	शुक्रवार, 18 मई 2013	प्रातः 9 से दोप. 02 बजे तक
दक्षिण दिल्ली	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजिनी नगर, वाई ब्लाक, नई दिल्ली–110023	मंगलवार, 21 मई, 2013	प्रातः 9 से दोप. 02 बजे तक
पश्चिमी दिल्ली	एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली – 110026	बुधवार, 22 मई 2013	प्रातः 9 से दोप. 02 बजे तक

मुख्य अतिथि वक्ता : ब्र.राजसिंह आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) **डा. महेश विद्यालंकार** (वरिष्ठ वैदिक विद्वान)

दिल्ली समस्त आर्य विद्यालयों के शिक्षक /शिक्षकाओं से निवेदन हैं कि इस कार्यशाला/गोष्ठी में अपने–अपने क्षेत्रानुसार आयोजित स्थान पर पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

–: निवेदक :–

सुरेन्द्र कुमार रैली	विनय आर्य	सत्यानन्द आर्य	राजीव आर्य	विशम्भरनाथ भाटिया	पुरुषोत्तमलाल गुप्ता
(प्रस्तोता)	(महामन्त्री)	(चेयरमैन)	(चेयरमैन)	(चेयरमैन)	(चेयरमैन)
आर्य विद्या परिषद् दिल्ली	दिल्ली आर्य प्र. सभा	एस.एम.आर्य प.स्कूल	रघुमल.आ.कन्या.सी.सै.स्कूल	दयानन्द मॉडल स्कूल	रतनचन्द आर्य प. स्कूल

वेद-स्वाध्याय

प्रभु नाम का स्मरण कठिन कार्य है

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवति। यमस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन्। ऋ0 10/12/6

अर्थ– (अत्र) इस संसार में (अमृतस्य नाम) अविनाशी प्रभु का नाम स्मरण (दुर्मन्तु) कठिन कार्य है, मन उममें लगता ही नहीं (यद्) जब (सलक्ष्मा) विषयों में आसक्त बुद्धि (विषुरुपा भवाति) सूक्ष्म, व्याप्त हो जाती है तब (यः) जो (सुमन्तु) शुभ विचारवान् (यमस्य) जगन्नियता परमेश्वर का (मनवते) मनन, ध्यान करता है तब हे (ऋष्व अग्ने) महान् परमेश्वर! (तम) उसकी (अप्रयुच्छन्) निरन्तर सावधानी से (पाहि) रखा करो।

मन्त्र पर विचार करने से पहले एक सेठ जी की घटना को उद्धृत करना उचित रहेगा। भौतिक सुख–सम्पत्ति सभी से सम्पन्न होने पर भी उस सेठ के मुख से कभी भगवान् का नाम स्मरण करते हुए उसे किसी ने नहीं देखा। प्रायः ऐसा होता है कि व्यक्ति लक्ष्मी को प्राप्त कर उसके स्वामी विष्णु को भूल जाता है। उसे यह ध्यान ही नहीं रहता कि किसी के घर में पति न हो तो उसकी पत्नी विधवा या विपरीत आचरण करने पर पुंश्चली बन जाती है। अतः पत्नी के साथ पति का होना ही सौभाग्य का सूचक है।

जब अन्त समय आया तो सेठ जी के मुख से नारायण शब्द निकला जिसे सुन सभी प्रसन्न हुये कि चलो अन्त भला सो भला। अब तो सेठ जी को प्रभु की याद आई। परन्तु सेठ जी अशान्त रहे। किसी परिचित ने कहा कि ये अपने लड़के को स्मरण कर रहे हैं जिसका नाम नारायण है। जब लड़का उनके सामने प्रस्तुत हुआ तब कहीं जाकर उसे सन्त्वना मिली। इसीलिये कहा– **दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम** संसार के मोहमाया जाल में फंसे हुये के लिये अमर प्रभु का नाम स्मरण करना कठिन कार्य है। क्योंकि उसकी मान्यता या विचारधारा श्रेयमार्ग के सर्वथा विपरीत होती है। जैसे भी हो, पैसा या सुख–सुविधा के साधन अपने और अपनी सन्तान के लिये संग्रह करना ही उसका ध्येय बन जाता है। निन्यानवें का फेर ही ऐसा है कि कब सूर्य उदय और कब अस्त हुआ, इसका उसे ज्ञान ही नहीं रहता। कोई सज्जन व्यक्ति यदि उसे धर्म–कर्म में सम्मिलित होने के लिये कहे तो वह उत्तर देता है कि मुझे तो मरने की भी फर्सत नहीं है क्योंकि **सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति** धन की चकाचौन्ध ने उसके विचारों को आसमान में चढ़ा दिया है। अब वह बोलता नहीं उपदेश करता है। लोग उसे अपनी सभाओं का मुख अतिथि या वक्ता बना उसका जय–जयकार करते हैं। उसके नाम से बड़े बड़े विज्ञापन एवं फलक स्थान–स्थान पर लगे हुये हैं जिन्हें देख उसका अहं और भी बढ़ जाता है और सोचने लगता है–मैं ही भाग्य विधाता हूँ। इसीलिये बाइबिल में कहा है–ऊँट का सूई के नाके में से निकलना सरल है परन्तु कोई धनी परमात्मा के स्वर्ग राज्य, मोक्ष में चला जाये यह सम्भव नहीं है।

ऐसे व्यक्ति का उद्धार तभी हो सकता है जब उसकी आँखों पर लगा चश्मा बदल कर उसे वास्तविकता का दर्शन कराया जाये और उसे बतायें –

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठ समंक्षितौ। विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।। *मनु0 4/241*

मृतक शरीर को काष्ठ या मिट्टी के ढेले के समान चिता पर छोड़ सभी बन्धु बान्धव लौट जाते हैं। उसके साथ धर्म को छोड़कर कोई नहीं जाता।

बुद्धि पर छाये इस तमोगुण को दूर करने के लिये किसी सत्पुरुष की संगति करना आवश्यक है। जिसकी दिशानुसार सत्संग स्वाध्याय, ईश्वरभक्ति, प्राणायाम, ध्यान, धारणा का अभ्यास यदि किया जाये तो **सलक्ष्मा यद् विषुरुपा भवाति**–प्रकृति जन्म विविध भोगों में आसक्त बुद्धि व्यापक और सूक्ष्म बन जाती है और उसे इस लोक के साथ परलोक भी दिखाई देने लगता है।

अब वह दुर्मन्तु से सुमन्तु बन गया है–**यमस्य यो मनवते सुमन्तु।** उसे यह ज्ञान हो गया है कि मेरे साथ मेरे किये हुये अच्छे बुरे कर्म ही साथ जायेंगे। पूर्वजन्म के पुण्यकर्मों के फल स्वरूप प्रभु ने मुझे धन–सम्पत्ति, पद, मान, प्रतिष्ठा उपलब्ध कराई है। अब यदि मैं पुण्य कर्म नहीं करूंगा तो मेरा अगला जन्म किसी पशु योनि या इससे भी निम्न स्थान में होगा। अब उसे भगवान् की याद आने लगी है। धर्म, कर्म, सत्संग, स्वाध्याय भक्ति, उपासना आदि में उसका मन लगने लगा है। प्रभु तो दयालु हैं ही। प्रातः का भूला यदि सायं को धर पर आ जाये तो उसे भूला नहीं माना जाता। उसकी जीवन नौका की पतवार अब उस कुशल मल्लाह ने थाम ली है जो अपनी शरण में आये हुओं को भवसागर से पार उतार देता है और उसके भक्त के मुख से अनायास ही ये शब्द फूट पड़ते हैं– **आयें है शरण तुम्हारी प्रभु रखियो जी लाज हमारी।।**

अग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन् – हे प्रभो! आप महान हो। शरणागत की रक्षा करना आपके स्वभाव में है। संसार के थपेड़ों से आहत इस भक्त का उद्धार करना आपका दायित्व है। आपकी इच्छा भी तो यही है कि सभी लोग शुभ कर्म करते हुये मुक्ति पथ के पथिक बन मेरे आनन्द का आस्वादन करें। **भद्रा इन्द्रस्य रातयः** तुम्हारे दोनों की महिमा नहीं गायी जा सकती। आपने हमें जो भी दिया है हमारे कल्याण के लिये ही दिया है और साथ ही साधन विहीनों का सहयोग कर उन्हें भी सतपथ पर चलाने का आदेश दिया है। अब हम दुर्मन्तु से सुमन्तु बन गये हैं। हमारी जीवन मर्यादित हो गया है। हमें अब अपनी मंजिल दीखने लगी है और उसे प्राप्त करने के लिये कुछ पग आगे भी बढ़ाये हैं। परन्तु हमारा यह प्रयास तभी सफल होगा जब आपकी कृपा दृष्टि हमारे ऊपर बनी रहे। बिना आपके मार्गदर्शन के हम कभी भी ठोकर लगकर नीचे गिर लक्ष्य से विचलित हो सकते हैं। त्राहिमाम्–त्राहिमाम्।। *– क्रमशः*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का
वैदिक प्रकाशन विभाग
प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु.	साहित्य	मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/–
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/–
3.	शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/–
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/–
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/–
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/–
7.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी. का सैट	100 /–
8.	वैदिक विनय	150/–
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/–
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/–
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/–
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /– सैंकड़ा
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /– सैंकड़ा
13.	नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/–
14.	नेम स्लिप (1×21)	10/–
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/–
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/–
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/–
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/–
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/–
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/–

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।
अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के तत्त्वावधान में आर्य वीर दल राष्ट्रीय शिविर

स्थान : गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

तिथिः सोमवार, 03 जून से रविवार 16 जून 2013 तक

आचार्य देवव्रत प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र(9416038142) | **नन्दकिशोर शास्त्री** प्रधान व्या.शि. (09466436220) | **प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार** महामन्त्री (09215226571) | **स्वामी देवव्रत** प्रधान संचालक(09868620631)

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सुरम्य वातावरण में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा 3 से 16 जून 2013 तक विशाल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आर्यवीर,शाखा नायक, उपनायक शिक्षक, व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी का शारीरिक,बौद्धिक तथा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्क : आर्य वीर – 250 /– रुपये,
शाखा नायक – 300 /– रुपये,
उपव्यायाम शिक्षक – 400/– रुपये,
व्यायाम शिक्षक एवं आचार्य – 500/–रुपये,
इस शुल्क में पाठ्यपुस्तकों का मूल्य भी सम्मिलित हैं।

शिविरार्थियों के लिए आवश्यक सामान : गणवेश : सफेद शर्ट, खाकी हॉफ पेन्ट, सफेद मौजे, सफेद जुते, सैन्डों बनियान, लंगोट, लाठी, नोटबुक, पेन, हल्का बिस्तर तथा दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ
शिविर में अनुशासन का पूर्णतः पालन करना अनिवार्य हैं। अनुशासनहीन शिविरार्थीयों को शिविर से पृथक भी किया जा सकता है।

मार्ग : 1. दिल्ली आम्बला से आने वाले शिविरार्थी पिपली बस स्टाप पर उतरकर लोकल बस अथवा टैम्पो द्वारा युनिर्वसिटी थर्ड गेट पर उतरें।
2. कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से उतरकर टैम्पो द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुँचें।

नोट :
1. आर्य वीर, आर्य वीर दल अथवा आर्यसमाज के अधिकारी का सन्तुति पत्र साथ लाएँ।
2. जो श्रेणी उत्तीर्ण की है। उसके प्रमाणपत्र की एक प्रति लिपि साथ लाएँ।
3. आचार्य श्रेणी में नियुद्धाचार्य, शस्त्राचार्य, व्यायाम आचार्य श्रेणी का प्रशिक्षण 3 जून से 23 जून तक चलेगा।
4. 16 जून से 23 जून तक व्यायाम शिक्षक और विशेष कार्यकर्ता भी अतिरिक्त प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

आर्य वीर दल ग्रीष्म कालीन प्रान्तीय स्तर पर आयोजित शिविर

प्रान्त	तिथि	शिविर का नाम	स्थान
राजस्थान राज्य	26 मई से 02 जून 2013 तक	आर्य वीर शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	गंगा नगर, राजस्थान
	17 मई से 23 मई, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	केकड़ी अजमेर (राजस्थान)
	17 मई से 23 मई, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर	जोना पच्चा खुर्द अलवर
	18 मई से 04 जून, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	ऋषि उद्यान अजमेर
उत्तराखण्ड राज्य	03 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीर शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	रुहालकी हरिद्वार
	23 जून से 30 जून, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	आर्य गुरुकुल पौन्धा (देहरादून)
गुजरात राज्य	20 मई से 26 मई, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	जुनागढ़ (गुजरात)
आन्ध्र प्रदेश राज्य	01 जून से 10 जून, 2013 तक	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	गुटटुर, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
हरियाणा राज्य	02 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीरागना दल शिविर	आर्य पब्लिक स्कूल सै. 4 गुड़गाव
	03 जून से 09 जून, 2013 तक	आर्य वीरागना दल शिविर	दयानन्द मठ, रोहतक
	17 जून से 23 जून तक 2013	आर्य वीरागना दल का राष्ट्रीय शिविर	गुरुकुल कुरुक्षेत्र
दिल्ली राज्य	19 मई से 26 मई, 2013	आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर	आर्य प. स्कूल, राजा बाजार
	23 मई से 2 जून, 2013	आर्य वीर चरित्र निर्माण एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर	एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग

सभी आर्यजन अपने-अपने प्रान्त में बच्चों को प्रशिक्षण शिविर में अवश्य ही भेजें।

गतांक से आगे

भारतीय संस्कृति के विनाश का पहला और बड़ा कारण

अन्धश्रद्धा

हम उससे कभी भी किसी भी पल प्रार्थना, उपासना कर सकते हैं। अब केवल और केवल ज्ञान की दूरी हमारे बीच रूकावट है ज्ञान की दूरी तभी दूर हो सकती है जब हम अपने अंदर छिपे अज्ञान को मिटा देंगे। अज्ञान कहते हैं असत्य विद्या को और जो सत्य विद्या है अर्थात् जो वस्तु जैसी हो उसको वैसा ही मानना और कहना सत्य है, वही सद्ज्ञान है। वही सत्यज्ञान हमें धारण करने में सदैव उद्यत रहना चाहिए और असत्य विद्या को छोड़ने में भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। यही महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है कि आप जो पौराणिकता के पाखण्ड के जाल में फंसे हैं उसे त्यागकर सच्चे ईश्वर को जानें और फिर मानें, अंधानुकरण न करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती उच्च ब्राह्मण कुल में जन्मे थे उन्हें क्या पड़ी थी कि किसी को सत्य बताएं, वे भी अन्य पाखण्डियों–पण्ड़ो की भाँति खूब पेट भरते और विवाह कर गृहस्थी बनते, पाँच–सात बच्चे पैदा कर उनके लिए धन–वैभव जोड़ लेते लेकिन नहीं उन्होंनें अपने जीवन में सत्य की खोज की, सच्चे ईश्वर को जाना और हमें सत्य सनातन वेद ज्ञान की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया। जो सत्य को ग्रहण कर लेता है फिर उसके समक्ष कितनी भी बड़ी विपत्तियां आ जाएं, बड़े से बड़े दु:ख को सहजता से झेल जाता है उफ् तक नहीं करता। तो आइए! अपने अंदर पनप रहे इस अंधविश्वास की जड़ों को उखाड़ने का प्रयास करें जब तक आप निम्न बातों पर विचार नहीं करोगे तब तक आपका अंधविश्वास नहीं टूटेगा जड़ें गहरी होती जाएंगी। आप जैसे अनेक पौराणिक लोग जो पण्डितों और गुरुओं के बहकावे में है वें कहते हैं मूर्ति पूजा के प्रति हमारी श्रद्धा है। एक कहावत भी है "मानो तो देव नहीं तो पत्थर" लेकिन जो जैसा है उसको वैसा ही मानना बुद्धिमानों का काम है तो पत्थर को पत्थर ही मानना चाहिए देव नहीं। क्या श्रद्धा से अथवा मानने से भगवान मिलते हैं? क्या जिसमें श्रद्धा कर लो वही भगवान है? ऐसा विचार करना हमारी भूल है तो विचार कीजिए निम्न बातों पर – क्या तेजाब को जल मान लेने से जल बन जायेगा? क्या गोबर को खीर समझने की श्रद्धा करें तो गोबर खीर बन जाएगी? क्या कलम में बंदूक की श्रद्धा करें तो कलम बंदूक बन जाएगी? क्या बजरी को चीनी समझने की श्रद्धा करें तो चीनी बन जाएगी? क्या मदिरा अर्थात् शराब में दूध की श्रद्धा करें तो शराब दूध बन जाएगा? शेर को गीदड़ समझकर उसके सामने जाओ, क्या शेर गीदड़ बन जाएगा और छोड़ देगा? यदि हम बल्ब को अज्ञानतावश या अपनी आस्था या श्रद्धा मानकर सूर्य समझने लगें तो क्या वह सूरज बन जाएगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्या कागज के फूलों से कभी सुगंध आती है? क्या बिल्ली नकली चूहे पर झपटती है? यदि मांस खाना ही श्रद्धा है तो अपने बच्चे का मांस खाएंगे आप? यदि बलि चढ़ाना ही आपकी श्रद्धा है तो क्या अपने किसी प्रियजन की बली चढ़ाना पसंद करेंगे? सृष्टि कभी मानव के हाथों से बन नहीं सकती, यदि बन सकती तो किसी को भी अंधी, लंगड़ी या मृत संतान नहीं होती। शराबी या मांसाहारी अपनी भावना अर्थात् श्रद्धा व आस्था के कारण ही तो मांस खाता या शराब पीता है, तो क्या उसकी यह भावना एवं आस्था उचित एवं अनुकरणीय है? उज्जैन के काल भैरव मन्दिर में सर्वदा चढ़ावे के रूप में शराब की बोतले अर्पित की जाती हैं। कहीं–कहीं तो मांस भी अर्पित किया जाता है क्या ये ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा है? अपनी आस्था व श्रद्धा के कारण अनेक बाँझ स्त्रियाँ पाखण्डियों पर अंधविश्वास कर दूसरों के बच्चों की बलि कर देती हैं क्या ये उनकी आस्था, उनका अंधविश्वास सही है? क्या भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है उसका एक बहुत बड़ा कारण हमारी अन्धश्रद्धा, हमारी गलत आस्था व भावना नहीं है? सोचिए जरा! केवल और केवल एक अकेली मूर्ति पूजा में अपनी श्रद्धा का परिणाम देखिए। वेदों में स्पष्ट है **"न तस्य प्रतिमा अस्ति"** अर्थात् उस ईश्वर की कोई प्रतिमा या मूर्ति ही नहीं है। पहले यज्ञशालाएँ होती थी। लगभग 2600 वर्ष पहले मूर्ति पूजा का आरम्भ हुआ, मन्दिर बने, उनमें यज्ञवेदियों के स्थान पर सोने, चाँदी, कांस्य व अन्य धातुओं की मूर्तियों की स्थापना की गई। मन्दिरों में चढावे के स्वरूप हीरे, मोती, रत्न, माणिक्य, पन्ना, पुखराज आदि आने लगे। कालान्तर में जब विदेशि यों को पता चला तो उन्होंने आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए। लोगों का रक्त बहाया। स्त्रियों की अस्मिता लूटी गई। मोहम्मद बिन कासिम, सुबुक्तगीन, गजनबी, तैमूरलंग, गौरी, बाबर आदि ने यहाँ लगभग 600–700 वर्षों तक खून की नदियां बहाई, लाखों मन्दिरों, महलों को धवस्त किया। गुरुकुलों, आश्रमों व विद्यालयों को नष्ट किया। यह सब उन मन्दिरों में अथाह धन–सम्पत्ति के कारण हुआ। आज भी इसका उदाहरण पद्मनाभ का मन्दिर जो दक्षिण भारत में विद्यमान है, 1 लाख करोड़ रुपये के लगभग उसमें हीरे–मोती–स्वर्ण आदि है। ऐसे ही जब सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा गया तो सन् 1001 में उसमें सैंतालिस सौ करोड़ रुपये के हीरे–जवाहरात व आभूषण मिले थे। आज उनका मूल्य क्या होगा? ये सब मूर्ति पूजा में श्रद्धा के कारण ही तो है।

इसी अविद्या के कारण सिन्ध के राजा की हार हुई। वह अत्यन्त साहसी एवं बलवान योद्धा था उसने कभी हार नहीं मानी बस मोहम्मद बिन कासिम और मन्दिर के पुजारी की मिलीभगत से अन्धविश्वास का आश्रय लेकर ही हार हुई। अन्यथा सेना को हराना टेढ़ी खीर है। कासिम को जब यह बात पता चली तो वह ब्राह्मण का वेश धारण कर सिंध के उस मन्दिर पर आ गया और पुजारी से युद्ध के समय झंडा झुका देने और जीतने पर आधा राज्य पारितोषिक स्वरूप देने को कहा। इस छल के कारण सिंध के राजा दाहिर की पराजय हुई थी। झंडा झुका देने से सेना का मनोबल अंधविश्वास के कारण टूट गया। दाहिर अकेला पड़ गया यह सब अवैदिक ज्ञान व अन्ध विश्वास के कारण ही तो हुआ। आखिर अपने हृदय से पूछें क्या मूर्ति पूजा परमात्मा को पाने के लिए की जाती है? सत्य तो यह है कि परमात्मा को साकार वस्तुओं के माध्यम से नही पाया जा सकता। मूर्तियों से तो भगवान का बनाया हुआ मनुष्य, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि का साकार रूप अच्छा जिनको देखकर मन स्थिर किया जा सकता है पर ऐसा नहीं होता। हर रोज हमारा मन इन साकारों को देखकर भी चंचल होता है, कलुषित होता है तो स्पष्ट है मन को, बुद्धि को, हृदय को साकर की आवश्यकता नहीं। जरा सोचिए, जब मन्दिर के भगवान को साकार रूप दे ही दिया तो पूजा अर्चना के समय आंखें बन्द करके क्यों बैठते हैं? टकटकी लगाकर निरन्तर उसे देखते क्यों नहीं?

प्रिय पाठकों! मूर्ति पूजन करने वाला मन्दिर में स्थित मूर्ति से मन्दिर में थोड़ा भय खाएगा अन्यत्र स्थान पर नहीं क्योंकि उसके लिए तो भगवान मन्दिर में ही रहता है परिणाम स्वरूप एकान्त पाकर खूब कुकर्म करेगा, क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा तो मन्दिर में है मुझे देख नहीं रहा। मूर्ति पूजक तो नास्तिक है, आस्तिक तो परमात्मा को कण–कण में मानने वाला है। अत: वह पाप कर्मों से स्वयं को बचा लेता है।

अत: पाठकों से निवेदन है मेरी बात को अन्यथा न लेकर अपने भीतर के ईश्वर को जानो तथा बाहरी दिखावा बन्द करो, मेरा मूर्ति पूजा के खण्डन का प्रयोजन किसी भी प्रकार से किसी के मन को दुखाना नहीं अपितु सत्य ज्ञान की ओर प्रेरित करना है। यदि उपरोक्त लेख के माध्यम से आपके अंदर सच्चे ईश्वर के प्रति थोडी सी भी सच्ची श्रद्धा उत्पन्न होकर आप इस अन्धकूप से निकलने का प्रयास करेगें तो मैं अपनी इस लेखनी को सार्थक समझूंगा।

– डॉ. गंगाशरण आर्य

ग्रा. शाहबाद मुहम्मदपुर, न.दि.–61

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास एमं का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

शारीरिक भाषा की .....

भाषण शैली – भाषण देते समय, खड़े रहने, बैठने, आगे–पीछे होने के तरीकों को भी शारीरिक भाषा कहते हैं। वक्ता सीधा खड़ा होकर भाषण देता है तो वह सतर्कता से बोलने वाला विद्वान् होता है। बोलनेवाला विषयानुरूप सम्पूर्ण सभा को अपनी ओर हाव–भाव से आकर्षित कर लेता है, तो समझना चाहिए कि वह अपने विषय में निष्णात है। मनुष्य की शारीरिक गतिविधियां भी उसकी आन्तरिक दशा का दिग्दर्शन कराती हैं। जैसे धीरे–धीरे चलने वाला आरामदायी होता है। हाथ आगे–पीछे हिलाते हुए चलने वाला ध्येयवादी। जेब में हाथ डालकर चलने वाला समीक्षक। हाथ पीठ के पीछे बांधकर चलने वाला स्वयं के लिए ही सोचने वाला और जमीन की ओर देखकर चलने वाला समस्याग्रस्त होता है।

हाथ – हाथों की अंगुलियाँ, कंधा, आंखों की हलचल भी शारीरिक भाषा है। इन्हीं अंगों की विशिष्ट हलचल से वक्ता अपने विचारों से श्रोताओं को अवगत कराता है। हलचल न करने वाले वक्ता को समझना कठिन है। विषयों के अनुसार अंग–प्रदर्शन करने वाला सफल वक्ता होता है। नृत्य में जनता समरस इसीलिए होती है, कि नर्तक, प्रसंगानुसार अंग प्रदर्शन कर शारीरिक भाषा से जनता को प्रभावित कर लेता है। शारीरिक भाषा का सर्वोत्तम उदाहरण 'लोक नाट्य' या 'तमाशा' है।

आँखों का प्रदर्शन – देशभाषा का ज्ञान नहीं। कोई जान–पहचान नहीं। पहले कभी एक–दूसरे को स्वप्न में भी नही देखा। फिर भी जब नजरों से नजर मिल जाती हैं तो, तोबा मच जाती है। यह शारीरिक भाषा का जबरदस्त प्रभाव है। मनुष्य की आँखें विविध भावनाएं प्रकट करती हैं। आनन्द, उत्साह, निराशा, क्रोध आदि भाव आँखों से पहचाने जाते हैं। सीधी आँखें, खुले होठ प्रसन्नता के सूचक हैं। लाल आँखें, तनी भौंए क्रोध का दिग्दर्शन कराती हैं। नीची आँखें, उदास चेहरा कमजोरी दर्शाती हैं।

भारतवर्ष में शासन मान्य भाषाएं व शतशः बोलियां बोली जाती हैं। यह असम्भव है कि एक व्यक्ति इतनी सारी भाषाओं–बोलियों को अवगत कर सके। यदि हम शारीरिक भाषा को अवगत कर लेते हैं तो, हर भारतीय भाई–बहनों के भावों–विचारों को समझकर सामंजस्य बनाकर जीवन सुखी बना सकते है।

– प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रथम पृष्ठ का शेष

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का ...

उपमन्त्री के रूप में सर्वश्री दक्षदेव गौड, कैलाश नारायण उपमन्यु, कमलेश याज्ञिक, श्रीधर शर्मा, डॉ. सत्य प्रकाश, एवं श्री दरबार सिंह आर्य तथा भूसम्पत्ति अधिष्ठाता – श्री वेद प्रकाश आर्य, आर्य वीर दल अध्यक्ष – श्री काशीराम अनल एवं पुस्ताध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र कौशल निर्वाचित घोषित हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निर्वाचित समस्त अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकानाएं।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

32वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

उद्घाटन : 12 मई सायं: 6 बजे
समापन : 26 मई प्रातः 10 बजे
स्थान :आर्य समाज मेन बाजार, रानी बाग, दिल्ली -34

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर भारत के विभिन्न प्रान्तों के आदिवासी क्षेत्रों से आए बच्चों एवं कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

– माता प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री

आर्यसमाज नवाबगंज गोण्डा की यज्ञशाला का शिलान्यास करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH हवन सामग्री
मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
प्राप्ति स्थान
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

अलवर में 51वाँ नि:शुल्क एलोपैथिक, होम्योपैथिक चिकित्सा जांच शिविर

श्री छोटू सिंह आर्य धमार्थ समिति द्वारा श्री च्यवन भार्गव के सहयोग से उनकी माताजी श्रीमती निर्मला भार्गव की स्मृति में 51 वां नि:शुल्क एलोपैथिक, होम्योपैथिक चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धमार्थ हॉस्पीटल में दिनांक 5 मई को आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति के कर–कमलों से हुआ।

शिविर में 250 रोगियों ने पंजीकरण कराया जिनकी रक्त जांच, ब्लड शूगर, रक्तचाप, पीएफ.टी, ईसीजी, बॉडी मास आदि की जांच सिपला कम्पनी के सहयोग से कराई गई तथा चिकित्सालय की ओर से रोगियों को आवश्यतानुसार नि:शुल्क दवाइयां वितरित की गई। **– कमला शर्मा**

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल नोएडा, बी-69, सै. 33 (उ.प्र.)

आर्यसमाज नोएडा के अन्तर्गत संचालित आर्ष गुरुकुल नोएडा में शिक्षा सत्र 2013-14 में प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश सीमित हैं। परीक्षा एवं साक्षात्कार उत्तीर्ण को प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। न्यूनतम शैक्षिक योग्यता पांचवी पास। शिक्षा शास्त्री तक शिक्षा निःशुल्क केवल भोजन शुल्क देय। गुरुकुल कांगड़ी विवि से मान्यता। कम्प्यूटर शिक्षा, गोदुग्ध एवं स्वच्छ वातारण। सम्पर्क करें।

दूरभाष – 0120-2505731, 9871798221

आर्ष गुरुकुल एरवा कटरा (औरया)

नवीन छात्रों का प्रवेश 15 मई से आरम्भ हो रहा है। कक्षा पांच उत्तीर्ण विद्यार्थियों का परीक्षोपरान्त प्रवेश किया जाएगा। विद्यालय उ.प्र. संस्कृत माध्यमिक शिक्षा परिषद् लखनऊ से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में संस्कृत व्याकरण, वेद, दर्शन पौरोहित्य कर्मकाण्ड अदि विषयों के अलावा आधुनिक विषयों एवं कम्प्यूटर की शिक्षा की भी व्यवस्था है। इच्छुक अभिभावक शीघ्र सम्पर्क करें। निर्धन परिवारों के मेधावी छात्रों को शुल्कादि में छूट का प्रावधान है। सम्पर्क करें –

आचार्य राजदेव शास्त्री, मो. 09411239744

आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम, सै. 115 नोएडा (उ.प्र.)

आर्ष कन्या गुरुकुल सोरखा नोएडा में कन्याओं के लिए प्रवेश आरम्भ हैं स्थान सीमित। दूसरी कक्षा पास से प्रवेश। 12वीं कक्षा तक मान्यता। शिक्षा एवं आवास निःशुल्क, केवल भोजन शुल्क देय। गो-दुग्ध की व्यवस्था प्राकृतिक वातावरण एवं खेलकूल की व्यवस्था। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

दूरभाष – 0120-2505731, 9871798221

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर (राजस्थान)

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर जिले में साबी नदी के किनारे दिल्ली से 100 किमी एवं जयपुर से 150 किमी दूरी पर स्थित है वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। गुरुकुल में अधिक से अधिक कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनें। विशेषताएं – कक्षा 6 से 9वीं, 11 वीं एवं शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश। 1. महर्षि दयानन्द विवि. रोहतक से मान्यता प्राप्त। पोष्टिक भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा, योग्य एवं अनुभवी आचार्यगण, तरणतार, 24 घंटी बिजली हेजु सौर उर्जा संयंत्र। शान्त एकान्त वातारण। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

आचार्या प्रेमलता शास्त्री, दूरभाष : 01495-270503, 09416747308

आर्ष गुरुकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली

दिल्ली की सुप्रसिद्ध संस्था व महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सम्बद्ध गुरुकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली में प्रवेश आरम्भ हो गया है। आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ प्राथमिक कक्षा से ही आधुनिक विषय अंग्रेजी, साईंस व कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाती है। प्रवेश हेतु सम्पर्क करें। – **आचार्य सुधांशु, मो. 9350538952**

गुरुकुल वटुक विकास केन्द्र अलियाबाद, रंगारेड्डी (आ.प्र.)

गुरुकुल में नवीन सत्र के लिए 1 अप्रैल से कक्षा प्रथम से पांचवी तक प्रवेश आरम्भ हैं। प्रवेश के लिए इच्छुक विद्यार्थी की आयु 5 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। दिनचर्या गुरुकुलीय होगी। शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, चिकित्सा आदि की व्यवस्था होगी। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए शीघ्र सम्पर्क करें – **आचार्य भवभूति आर्य, 09392476077, 9390792645**

शोक समाचार

श्री रामचन्द्र आर्य को पत्नीशोक

आर्यसमाज भीम नगर गुड़गांव से सम्बन्धित आर्य नेता श्री रामचन्द्र आर्य जी की धर्मपत्नी श्रमती रामप्यारी जी का दिनांक 12 अप्रैल, 2013 को 82 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे अपने पीछे एक भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उन्होंन मराणोपरान्त अपनी आंखें दान करके निःस्वार्थ परोपकारी जीवन का परिचय दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

कार्यक्रम सम्पन्न

ध्यान-योग साधना शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज अशोक विहार-1, दिल्ली में आचार्य अखिलेश्वर जी के सान्निध्य में दिनांक 29 मई से 2 जून तक प्रातः 5:30 बजे से 6:20 बजे ध्यान –योग साधना शिविरि आयोजित किया जा रहा है।कृपया अपने नाम पहले से पंजीकृत करवा लेवें। पंजीकरण पहले आओ पहले पाओ के आधार पर होगे। पंजीकरण क लिए सम्पर्क करें – श्री जीवन लाल आर्य (9718965775), श्री सत्यपाल आर्य (9810047341), श्री राममेर सिंह (995889668) – ***संयोजक***

योग-ध्यान साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम आश्रम गढ़ी उधमपुर (जम्मू-कश्मीर) का ग्रीष्मकालीन योग-ध्यान-साधना शिविर महात्मा चैतन्यमुनि तथा यतिमा सत्याप्रिया जी के सान्निध्य में 7 से 14 अप्रैल, 2013 तक सम्पन्न हुआ। शिविर में प्रातःकाल ध्यान, योगासन एवं प्राणायाम तथा यज्ञादि के कार्यक्रम होते थे। शंकासमाधान एवं प्रवचन आचार्य सानन्द जी एवं श्री अखिलेश भारतीय के हुए। इस शिविर का 160 शिविरार्थियों ने लाभ उठाया। – ***भारत भूषण, प्रधान***

द्वारका में वैदिक सत्संग सम्पन्न

दिनांक 24 अप्रैल, 2013 को थाना सैक्टर-23 द्वारका के परिसर में वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रणव देव शास्त्री एवं श्री वेद प्रकाश आर्य, सहायक पुलिस आयुक्त, दिल्ली पुलिस के प्रवचन एवं बहन विद्यावती (सागरपुर) एवं श्री हरिसिंह जी के भजन हुए। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य ने इस अवसर विशेष रूप से उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित किया।

139वां स्थापना दिवस समारोह

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम नोएडा के तत्वावधान में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर 139वां आर्यसमाज स्थापना दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर चतुर्वेद शतद पारायण यज्ञ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें डॉ. डी.के. गर्ग तथा श्री राजीव परम जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी आहुति प्रदान की। मुख्य वक्ता आचार्य वीरेन्द्र विक्रम थे।

कार्यक्रम का संचालन मन्त्री श्री विजेन्द्र कठपालिया ने किया तथा प्रधान जी ने उपस्थित सभी आर्यजनो का आभार व्यक्त किया। – ***अशोक गुलाटी, प्रधान***

पर्यावरण एवं विश्व शान्ति हेतु 51 कुण्डिय यज्ञ

आर्य कन्या विद्यालय समिति, श्रीरामलीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति एवं अलवर जिले के समस्त आर्यसमाज के सहयोग से पर्यावरण शुद्धि एवं विश्वशान्ति हेतु 51 कुण्डिय यज्ञ का आयोजन दिनांक 21 अप्रैल, 2013 को आचार्य हरिप्रसाद जी व्याकरणाचार्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उन्होंने कहा कि वेद के ज्ञान से हम अपने आचरण को बदल सकते हैं तथा परमपिता ही हमें सद्बुद्धि देते हैं।

समारोह में स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी (पिपराली), आचार्य देवव्रत सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी एवं मन्त्री श्री अमरमुनि वानप्रस्थ मुख्य रूप से उपस्थित थे। यज्ञ में भाग लेने वाले प्रत्येक यजमान को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। समारोह को सफल बनाने में आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, उप प्रधान श्री अशोक आर्य एवं मन्त्री श्री प्रदीप आर्य से सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विशेष रूप से साहित्य प्रचार स्टाल लगाने के लिए आमन्त्रित किया गया। – ***कमला शर्मा, निदेशक एवं संयोजिका***

आगामी कार्यक्रम

40वां वार्षिकोत्सव का आयोजन

रामगली आर्यसमाज हरिनगर घंटाघर नई दिल्ली-64 का 40वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 17, 18, 19 मई, 2013 को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य योगेन्द्र शास्त्री के प्रवचन एवं पं. श्यामवीर राघव जी के सुमधुर भजन होंगे। मुख्य अतिथि श्रीमती राजकुमारी ढिल्लो (निगम पार्षद्) होंगी। इस अवसर पर समाज की वयोवृद्ध सदस्या श्रीमती सावित्री शर्मा 'सैलानी' एवं श्रीमती कौशल्या मल्होत्रा जी को सम्मानित किया जाएगा। – ***श्रीपाल आर्य, मन्त्री***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अशोक विहार
फेज-1, एफ ब्लाक, दिल्ली-52

प्रधान : श्री राममेहर सिंह
मन्त्री : श्री जीवन लाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश गुप्ता

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा
आर्य नगर, नई दिल्ली-55

प्रधान : श्री रवि गुप्ता
महामन्त्री : श्री नाहर सिंह वर्मा
मन्त्री : श्री जनमेजय राणा
कोषाध्यक्ष : श्री ओमप्रकाश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
पाँचवां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन का पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के पांचवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **यह सम्मेलन रविवार,14 जुलाई 2013 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट –2 नई दिल्ली** में आयोजित किया जाएगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें और जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र 30 जून तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक–युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। इस वर्ष इसे और व्यापक रूप देते हुए इसमें अनेक आर्यजनों ने अपना सहयोग निम्न रूप से प्रदान किया है। इन सभी महानुभावों से क्षेत्रीय स्तर पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

कार्ययोजना संयोजक
श्री गोविन्दलाल नागपाल जी
(09811623552)

संयोजक आयोजन
श्री प्रियव्रत जी
प्रधान, आ.स.ग्रेटर कैलाश–2

राष्ट्रीय संयोजक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा
(09414187428)

विभिन्न क्षेत्र के संयोजक

गुजरात
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
(09824072509)

राजस्थान
श्री अमरमुनि वानप्रस्थ
(09214586018)

उत्तर प्रदेश
डॉ. अशोक आर्य
(09412139333)

आन्ध्र प्रदेश
श्री धर्मतेजा जी
(09848822381)

छत्तीसगढ़
श्री दीनानाथ वर्मा
(09826363578)

महाराष्ट्र
डॉ. ब्रह्ममुनि जी
(09421951904)

उत्तराखण्ड
डॉ. विनय विद्यालंकार
(09412042430)

विदर्भ
श्री कृष्ण कुमार शास्त्री
(09579768015)

जम्मू–कश्मीर
श्री राकेश चौहान
(09419206881)

हरियाणा
श्री कन्हैयालाल आर्य
(09911179073)

हिमाचल प्रदेश
श्री रामफल आर्य
(09418277714)

उडीसा
स्वामी सुधानन्द सरस्वती
(09861339060)

असम
श्री लोकेश आर्य
(09435017811)

पंजाब
श्री दिनेश आर्य
(01832333899)

महिला संयोजिका
श्रीमती वीणा आर्या
(9810061263)
श्रीमती रश्मि आर्या
(9971045191)
श्रीमती विभा आर्या
(9873054398)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म् ।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001 दूरभाष :– 011–23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. - 011-23488888

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

फोटो
युवक–युवती

1. युवक/युवती का नाम :.....गौत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
.....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
9. भाई: ..... विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : ..... विवाहित ..... अविवाहित : .....
10. मकान निजी/किराये का है.....
11. किस आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) चिन्ह लगाएं :विधुर : ( ) विधवा: ( ) तलाक : ( ) विक्लांग: ( )
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में दें :.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट: 1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 200/– का ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजने का कष्ट करें। विक्लांग युवक–युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क रु.100 /– रखा गया है। 2. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी। 3. आप इस फार्म को **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। 4. इस फार्म की फोटो कॉपी प्रति भी मान्य होगी। 5. विशेष आग्रह : अपने रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य साथ लावें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार, 6 मई से रविवार, 12 मई, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 09/ 10 मई –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 मई, 2013

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों ने निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य का यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/– रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/– रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

निराश्रित बच्चे ईश्वर की बनाई साक्षात् मूर्तियाँ

"निराश्रित बालक–बालिकाएं ईश्वर की बनाई गई साक्षात् मूर्तियां हैं इन्हें आपके प्यार–दुलार की आवश्यकता है। कभी समय निकालकर इन निराश्रित बच्चों के बीच बिताएं। इनकी सेवा और सुश्रुषा करना ईश्वर भक्ति के समान है।" ये विचार आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने वीर सावरकर नगर स्थित निराश्रित बालगृह में व्यक्त किए। इस अवसर पर जिला सभा की ओर से बच्चों को खाद्य सामग्री के पैकेट वितरित किए गए। सभामन्त्री

श्री कैलाश बाहेती ने बच्चों को स्वच्छ रहने और मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

– अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति इलाहाबाद की ओर से
पुरस्कार हेतु नाम आमन्त्रित

आर्यसमाज के उद्भट विद्वान, प्रचारक एवं लेख पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय की स्मृति में समिति विगत लगभग 40 वर्षों से आर्यसमाज विचारधारा से सम्बन्धित ग्रन्थों पर पुरस्कार प्रदान कर रही है। इस पुरस्कार में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र एवं अंगवस्त्र प्रदान किया जाता है। विद्वान् सर्जकों से सादर अनुरोध है कि वे अपनी कृति की चार प्रतियां कार्यालय के पते पर 31 मई, 2013 तक भेजें। *– राधे मोहन, प्रधान,*

गंगा प्रसार उपाध्याय पुरस्कार समिति, 843/1248, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैकड़ा	मात्र 300/-रु. सैकड़ा

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

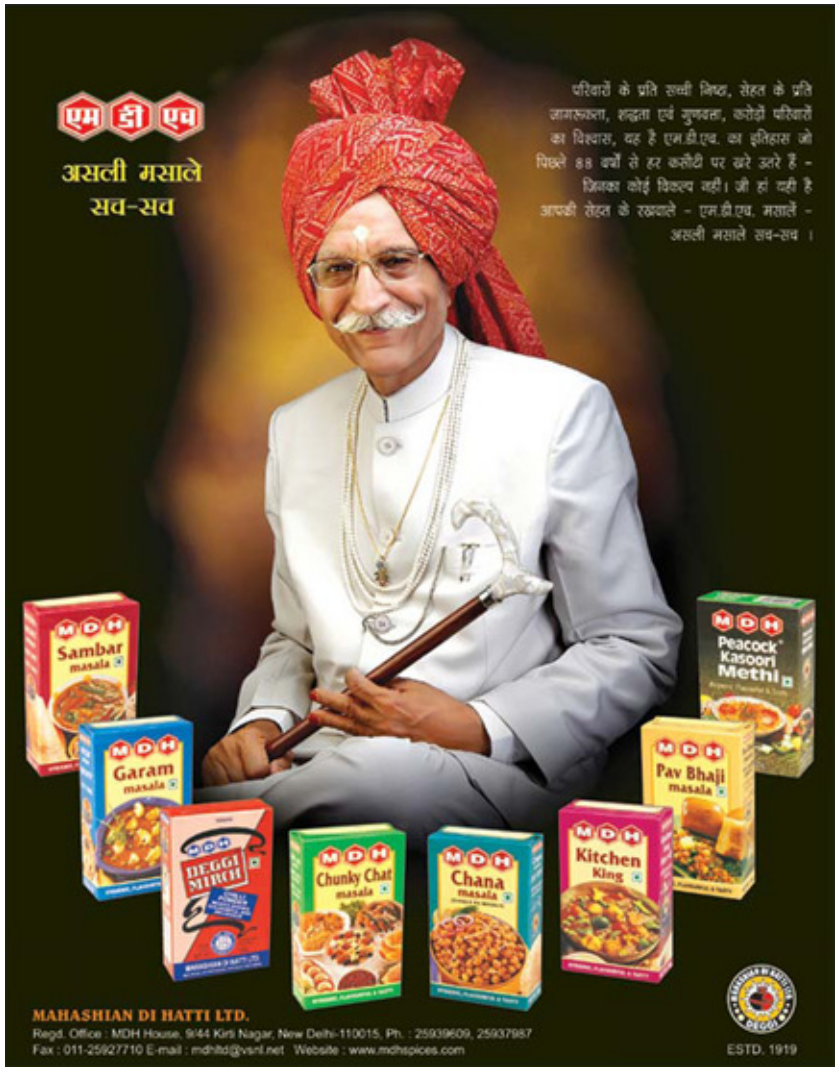

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर